कविवर पंडित संतलालजी कृत

तृतीय पूजा

32 गुण सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्ग्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !
भवत्रासित अकुलित रहै, भवि कठिन मिटन दुखताई।।
विमल चरन तुम सलिल धार दे, पायो सहज उपाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
जन्मजरा-मृत्यु रोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जगवंदन परसत पद चन्दन, महाभाग उपजाई।
हरिहर आदि लोकवर उत्तम, कर धर शीश चढ़ाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शिवनायक पूजन लायक है, यह महिमा अधिकाई।
अक्षयपद दायक अक्षत यह, साँचो नाम धराई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कामदाह अति ही दुखदायक, मम उर से न टराई।
ताहि निवारण पुष्प भेंट धरि, माँगूँ वर शिवराई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चरुवर प्रचुर क्षुधा नहिं मेंटत पूर परौ इन ताई।
भेंट करत तुम इनहूँ न भेंटूँ, रहूँ चिरकाल अघाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दिव्य रत्न इस देश-काल में, कहै कौन है नांई।
तुम पद भेंटे दीप प्रकट यह, चिंतामणि पद पाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूप हुताशन वासन में धरि, दसदिश वास वसाई।
तुम पद पूजत या विधि वसु विधि, ईंधन जर हो जाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्तम फल द्रव्य ठान मन, पूजूं हूँ तुम पाई।
जासौं जजैं मुक्तिपद पइये, सर्वोत्तम फलदाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

वसुविधि अर्घ देऊँ तुम मम द्यो, वसुविधि गुण सुखदाई।
जासु पास वसु त्रास न पाऊँ, 'सन्त' कहे हर्षाई।।
प्रभु पूजो रे भाई ! सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजो रे भाई !

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

पंच परम पद ईश हे ! पंचम गति जगदीश।
जगत-प्रपंच रहित बसे, नमूँ सिद्ध जग-ईश।।
परम ब्रह्म परमातमा, परम ज्योति शिवथान।
परमातम पद पाइयो, नमों सिद्ध भगवान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कामिनी-मोहन

जन्ममरण-कष्ट को टारि अमरा भये, जरादि रोगव्याधि परिहार अजरा भये।
जय द्विविधि कर्ममल जार अमला भये, जय दुविधि टार संसार अचला भये।।
जय जगतवास तज जगतस्वामी भये, जय बिना नाम थिर परमनामी भये।
जय कुबुद्धिरूप तजि सुबुद्धिरूपा भये, जय निषध दोष तज सुगुण भूपा भये।।
कर्म-रिपु नाशकर परम जय पाइए, लोकत्रय पूरि तुम सुजस घन छाइये।
इन्द्र नागेन्द्र धर शीश तुम पद जजैं, महा वैरागरस पाग मुनिगण भजैं।।
विघन वन दहन को अघन घन पौन हो, सघन गुणरास के वास को भौन हो।
शिवतिया वशकरन मोहिनी मंत्र हो, काल क्षयकार बेताल के यंत्र हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कोटिथित क्लेश को मेटि शिवकर रहो, उपल की नकल हो अचल इकथल रहो।
स्वप्न में हू न निज अर्थ को पावहीं, जे महा खल न तुम ध्यान धरि ध्यावहीं।।
आपके जाप बिन पाप सब भेंटही, पाप की ताप को पाप कब मेंटही।
'संत' निज दास की आस पूरी करो, जगत से काढ़ निज-चरण में ले धरो।।

घत्ता

जय अमल अनूपं, शुद्ध स्वरूपं, निखिल निरूपं धर्मधरा।
जय विघन नशायक, मंगलदायक, तिहुँ जगनायक परमपरा।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः द्वात्रिंशत्गुणसंयुक्तसिद्धेभ्यो
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।